Dainik Bhaskar (Indore), 28th February 2020, Page- 6

नेशनल साइंस डे आज • 34 करोड़ के सेंटर में 40 तरह के उपकरण उच्च गुणवत्ता वाला डाटा करते हैं एनालिसिस

इंदौर आईआईटी का सोफेस्टिकेटेड इंस्ट्रूमेंट सेंटर, देश व विदेश के कई संस्थानों को दे रहा रिसर्च के सटीक आंकड़े

भास्कर संवाददाता | इंदौर

आईआईटी इंदौर में 38 करोड़ की लागत से सोफेस्टिकेटेड इंस्ट्रूमेंट सेंटर (एसआईसी) बनाया गया है। रिसर्च को बढ़ावा देने के उद्देश्य से तैयार किए गए सेंटर की सुविधा का उपयोग भाभा एटॉमिक रिसर्च सेंटर, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय सहित कई शिक्षण संस्थान, उद्योग और विदेशी विश्वविद्यालय कर रहे हैं। एसआईसी में 40 साइंटिफिक उपकरण लगे हैं, जो इंजीनियरिंग और साइंस क्षेत्र में रिसर्च कर रहे छात्रों के सैंपल का विश्लेषण कर उनका रिकॉर्ड भी रखते हैं। इस सेंटर में लगे सिंगल क्रिस्टल एक्सरे डिफ्रेक्शन, न्यूक्लियर मैग्नेटिक रेजोनेंस, मास स्पेक्ट्रोमेट्री सहित सभी उपकरण आधुनिक तकनीकों से लैस हैं। आईआईटी की विभिन्न लेबोरेट्रीज में काम करने वाले छात्र इन उपकरणों की मदद से अपने प्रयोग में उपयोग किए जाने वाले पदार्थों का अलग-अलग तरीकों से परीक्षण-निरीक्षण कर सटीक आंकड़े हासिल करते हैं। ये उपकरण अत्यधिक गुणवत्ता वाला डाटा एनालिसिस करने में सक्षम हैं।

5 करोड़ का लेजर स्कैनिंग माइक्रोस्कोप भी, इससे धूल से भी छोटे अणुओं को देख सकते हैं

एसआईसी में लगे उपकरणों की कुल कीमत 34.36 करोड़ रुपए है। यहां लगा सबसे महंगा उपकरण कॉनफोकल लेजर स्कैनिंग माइक्रोस्कोप है जिसकी कीमत 5 करोड़ रुपए है। फ्लोरोसेंस के सिद्धांत पर आधारित इस माइक्रोस्कोप का उपयोग बायोलॉजी के लिए ज्यादा होता है। इसमें एक हेलोजन लैंप, मरक्यूरी बर्नर और पांच लेजर सहित एक अन्य लैंप होता है। ये अत्यंत छोटे अणुओं के विश्लेषण के लिए उपयोग किया जाता है जिन्हें साधारण माइक्रोस्कोप से नहीं देखा जा सकता। धूल कण से भी कई गुना छोटे अणु को इस माइक्रोस्कोप से देखा जा सकता है। इसके अलावा न्यूक्लियर मैग्नेटिक स्पेक्ट्रोमीटर (एनएमआर) की कीमत भी 3.8 करोड़ है। इसकी सहायता से ऐसे अणुओं की संरचना पता की जाती है जिसके बारे में पहले से ज्यादा जानकारी नहीं होती।

जर्मनी, ढाका और मदीना तक की यूनिवर्सिटी ले रहीं सेंटर की सुविधा

बंग्लादेश की ढाका, जहांगीरनगर यूनिवर्सिटी, जर्मनी की स्टूटगर्ट, सऊदी अरब की ताइबा यूनिवर्सिटी (मदीना), भाभा एटॉमिक रिसर्च सेंटर मुंबई, बीएचयू, दिल्ली यूनिवर्सिटी, आईआईटी मुंबई, मंडी इस सेंटर की मदद ले रहे हैं। ग्लेनमार्क फार्मास्वीटिकल, पिरामल हेल्थकेयर, ल्यूपिन फार्मा, मिमानी वायर्स, चोकसी लैब्स कंपनियां भी उपयोग कर रहीं।